रात का गीत (1 जुलाई)

उत्पत्ति 24:63 और सांझ के समय वह मैदान में ध्यान करने के लिये निकला था।

ये कितना असंभव होगा कि परमेश्वर की संतान जिसने पुरे दिन की कई घटनाओं को याद किया होगा और उनसे प्रभावित हुआ होगा, जिसने परमेश्वर के ज्ञान और देखभाल को चखा होगा, जिसने देखा होगा कि निश्चय सब बातें मिलकर उसके लिये भलाई ही को उत्पन्न करती हैं, वो पूरा दिन परमेश्वर का अनुग्रह चखने के बाद भी बिना धन्यवाद किये सो जाये। ये कितना असंभव होगा कि जिनकी सामर्थ्य और वादों को उसने पुरे दिन लगातार देखा और सीखा है, उनका हृदय से आभार प्रगट किये बिना ही वह सो जाये। और ये कितना उचित होगा कि घुटने टेककर और हृदय से झुककर पूरी श्रद्धा से आदर और धन्यवाद पेश किया जाये। Z'85-Nov.p.4 R799:3 (Hymn 274) आमीन

रात का गीत (2 जुलाई)

रोमियो 5:1, 3-5 सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें। केवल यही नहीं, वरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज। ओर धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है। और आशा

से लज्ज़ा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

नई सृष्टि के रूप में ये विचार हमारे लिये बहुत अनमोल है। "परमेश्वर की शांति जो सारी समझ से परे है" हमारे मन और ह्रदय में बसनी चाहिये और राज्य करनी चाहिये! ... हमारे पास शांति है, बाहर की स्थितियां चाहे जो भी हों हमें फर्क नहीं पड़ता है। जीवन की परीक्षाएँ और कठिनाइयां आनंद के साथ मिलकर परमेश्वर के लोगों के लिए आती हैं - बारिश और तूफान, फिर धूप। वे उन सभी धार्मिक सुखों में आनंदित रहते हैं जो उनके समर्पण की वाचा से मेलजोल रखते हैं। वे क्लेश से धीरज उत्पन्न करना सीखते हैं ये जानते हुए कि धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से ज्यादा से ज्यादा आशा उत्पन्न होती है और आशा से लज्ज़ा नहीं होती। Z'16-102 R5879:2 (Hymn 312A) आमीन

रात का गीत (3 जुलाई)

इब्रानियों 10:30 “प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा"।

यदि प्रभु के लोग पर्याप्त मात्रा में सचेत नहीं रहने के कारण किसी परेशानी में पड़ते हैं, तो प्रभु उन्हें कुछ ऐसे अनुभव देंगे जिन्हें यदि सही तरीके से ग्रहण किया जाये तो वे अनुभव उनके लिये अच्छे रहेंगे। आइये

हम प्रेरित पौलुस के चेतावनी वाले वचनों को याद रखें: "यदि हम अपने आप को जांचते, तो दण्ड न पाते"। (1 कुरिन्थियों 11:31) इसका मतलब ये हुआ कि जब हम खुद को जाँचना अनदेखा कर देते हैं तब प्रभु को हमारा न्याय करना पड़ता है। तब हमें सुधारने के ख्याल से ताड़नाएँ दी जाती हैं, ताकि हो सकता है कि हम उस स्वर्गीय इनाम और समर्थन को पा सकें जो कि यदि हम प्राण देने तक विनम्र और विश्वासी रहे तो मसीह में नई सृष्टि होने के कारण हमारी है। यदि हम विनम्रता में निरंतर बने रहें और नम्रता की आत्मा से भर जाएँ, वर्तमान में आदर सम्मान और ऊँचे पद की लालसा न रखें, बल्कि पुरे धैर्य से प्रभु के अपने भले समय की प्रतीक्षा करने के इच्छुक रहें, तो निश्चय हमारी उन्नति होगी; और हम अपने उद्धारकर्ता के सिंहासन और उनकी महिमा को सदा के लिये और ज्यादा बाटेंगें। Z'16-132 R5890:5 (Hymn 67) आमीन

रात का गीत (4 जुलाई)

भजन संहिता 60:4 तू ने अपने डरवैयों को झण्डा दिया है, कि वह सच्चाई के कारण फहराया जाए।

धन्यवाद पेश किया जाये। हमें इस गौरवशाली संदेशे को आगे बताना है। हमें इस संदेशे को अपनी क्रियाओं में, अपने शब्दों में बताना है, छापे गये पन्नों के द्वारा, आँखों को भाने वाले सचित्र विवरण के द्वारा, और हर

एक तरीके से जिसका अवसर हमें प्रभु से मिलता जाये ... यदि हम आनंद के इस सुसमाचार को आगे बताने से खुद को रोकेंगे, तो इसका नतीजा ये होगा कि परमेश्वर की पवित्र आत्मा की आग हममें बुझ जाएगी। सच्चाई - परमेश्वर के सन्देश की देखभाल करने वाला बनना, इस अधिकार के साथ - साथ बहुत ही बड़ी जिम्मेदारी भी लाता है। हमें यह करने के लिए वफादार साबित होना होगा। हमें हमारे परमेश्वर को उनकी प्यारी दया के प्रति अपने दिल से सराहना दिखानी होगी जिन्होंने हमें इस उद्धार के अद्भुत संदेशे से परिचित कराया है, अपनी महान दिव्य योजना से उसके सभी समयों और मौसम के साथ परिचित कराया है। Z'14-198 R5489:5 (Hymn 280) आमीन

रात का गीत (5 जुलाई)

भजन संहिता 121:4 सुन, इस्राएल का रक्षक, न ऊंघेगा और न सोएगा॥

आइए हम एक क्षण के लिए नीचे लिखी बातों पर ध्यान करें -- आइए हम परमेश्वर की स्मृति पर ध्यान करें जो कभी भी असफल नहीं होती; उनका न्याय जो कभी गलती नहीं करता; उनका ज्ञान जो युगानयुग के लिए बिना किसी असफलता की संभावना की योजना बनाता है, और उनके सर्वोचित समयों और कालों की योजना को जो आनेवाले युगानयुग तक

के लिए अपनी योजना को समयों के साथ बताते हैं, जिनमें कोई भी भुल नहीं होती; उनकी ऐसी शक्ति और हुनर है जो हर एक विरोधी तत्व को भी, सजीव हो या निर्जीव, काम में लाकर, सभी को एक साथ मिलाकर अपनी भव्य योजना की उपलब्धि के लिए काम में लाते हैं; जो बिना थके हमेशा चौकन्ना रहते हैं, जो अपने व्यापक प्रभुत्व की देखभाल से कभी भी विश्राम नहीं पाना चाहते, जिनकी आँखें कभी नहीं सोती, जिनके कान हमेशा खुले रहते हैं, जिन्हें हर जरुरत के बारे में हमेशा जानकारी रहती है, और जो अपनी रूचि के सभी विस्तृत क्षेत्रों में क्रियाशील रहते हैं। `Z'93-227` R1560:2 (Hymn 293) आमीन

रात का गीत (6 जुलाई)

सभोपदेशक 5:4 जब तू परमेश्वर के लिये मन्नत माने, तब उसके पूरा करने में विलम्ब न करना।

जिस किसी ने भी संकल्प करने की, प्रभु के लिये मन्नत मानने की अपनी आवश्यकता को नहीं देखा है, उसने मसीही उन्नति के पहले सिद्धांत को मान्यता नहीं दी है। वह जो दुश्मन के हमले से पाता है, उसकी दीवार कहाँ सबसे कमजोर है, और जो बाद में कमजोर जगहों की जल्द से जल्द मरम्मत करवाता है, ऐसा वह प्रभु के प्रति संकल्प या मन्नत के द्वारा करता है। जिसने अपने चरित्र में कोई कमी नहीं खोजी है, वह विधिवत

अंधा है, और "दूर से नहीं देख सकता।" वह जिसने संकल्पों और प्रभु के प्रति मन्नत लेने के द्वारा अपनी कमजोरियों को ठीक करने का प्रयास नहीं किया है, उसने चरित्र का विकास शुरू नहीं किया है, जिसकी बढ़ोतरी उसके जयवंत घोषित होने से पहले अवश्य हो जानी चाहिए। `Z'09-76` R4348:3 (Hymn 192) आमीन

रात का गीत (7 जुलाई)

उत्पत्ति 12:8 और वह (अब्राहम) उस पहाड़ पर आया, जो बेतेल के पूर्व की ओर है; और अपना तम्बू उस स्थान में खड़ा किया; ... और वहां भी उसने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई: और यहोवा से प्रार्थना की।

नि:संदेह कनानी लोगों के अनैतिक प्रभावों से मुक्त होना और अब्राहम के लोगों का इन से अलग होना मुश्किल था, और इसलिये अपने लोगों को कनानियों से अलग करने के लिये अब्राहम बाद में बेथेल के पास के पहाड़ी देश में चला गया। वहाँ उसने अपने घर की स्थापना की, वहाँ उसने एक वेदी प्रभु को दी और प्रार्थना की। इसी प्रकार परिवार के मुखिया को अपने लोगों के लिये यह ध्यान से देखना चाहिए कि, उसकी देखभाल में जो लोग हैं, उनके लिये क्या हितकारी है, ताकि ये हित हर जगह उनके कल्याण के लिए लाभकारी हों! और इससे भी अधिक इन्हें यह महसूस करना चाहिए की, उनके घर में प्रभु के लिये वेदी का होना कितना अनिवार्य

है, जहाँ उद्धारकर्ता के बलिदान के मूल्य में उनकी प्रार्थनाओं की सुगन्ध पिता तक ऊपर जा सके। `Z'09-76` R4348:3 (Hymn 192) आमीन

रात का गीत (8 जुलाई)

मत्ती 20:12 कि इन पिछलों ने एक ही घंटा काम किया, और तू ने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जिन्हों ने दिन भर का भार उठाया और धूप सही?

जिस किसी को भी पवित्र आत्मा से नया जन्म मिला है, और इस कारण से इस "ऊपरी बुलावे" की कदर करने और सुसमाचार के युग के "ऊपरी बुलावे" के इनाम के लिये दौड़ने की सामर्थ्य रखता है, वो ये जानता है कि उसको अभी तक जारी किए गए एकमात्र बुलावे के द्वारा बुलाया गया है: और अगर अपनी मर्जी से वह अपना सब कुछ बलिदान करेगा तो वो भी वही दौड़ दौड़ रहे अन्य लोगों की तरह इस इनाम को पाने के लिये निश्चित हो सकता है। (परमेश्वर की ओर से ठहराई हुई) इस तरह की व्यवस्था ठीक समय पर किये गए समर्पण और उसकी स्वीकृति का प्रमाण है और इसलिए पवित्र आत्मा से नया जन्म पाने का प्रमाण है। अतः, प्रिय साथी मजदूरों, श्रेष्ठतम तरीके से जोर देकर, दौड़ते जाओ, चाहे आपने खेत काटने के लिये हाल ही में प्रवेश किया हो या पहले प्रवेश किया हो; हम सब एक ही प्रभु की, एक ही विश्वास में; और उनकी मृत्यु के बपतिस्मा के द्वारा सेवा करते हैं; और ऐसे सभों के लिये उनके पास

जीवन का मुकुट आरक्षित है। `Z'88-June, p.8` R1046:5 (Hymn 263) आमीन

रात का गीत (9 जुलाई)

भजन संहिता 132:4,5 न अपनी आंखों में नींद, और न अपनी पलकों में झपकी आने दूंगा, जब तक मैं यहोवा के लिये एक स्थान, अर्थात याकूब के सर्वशक्तिमान के लिये निवास स्थान न पाऊं।

जैसा की दाऊद के ह्रदय में था की वे परमेश्वर के लिए मन्दिर बनायें, वैसे ही परमेश्वर के लोगों के मन में, स्वभाविक रूप से अभी के समय में ये इच्छा आती है कि, वे प्रभु और उनके राज्य से सम्बन्धित चीज़ों को स्थापित करें...अभी ही समय है विभिन्न तत्वों जैसे की सोना, चांदी, बहुमूल्य पत्थर, आदि को इकट्ठा करने का, जिससे मिलकर थोड़ी देर में प्रभु के मन्दिर का निर्माण होगा। अभी ही समय है, न केवल पत्थरों की खदान के लिए, बल्कि परमेश्वर के मंदिर में उनके विभिन्न पदों के लिए उन्हें आकार देने के लिए भी। इसका मतलब यह है की, अभी के समय में, परमेश्वर, केवल सन्तों को खोज ही नहीं रहे हैं, बल्कि उनको तराश भी रहे हैं, ताकि वो परमेश्वर के मन्दिर में उचित स्थान पा सकें। अब, जैसा कि पवित्रशास्त्र में सुझाव दिया गया है, हम जीवते पत्थर हैं, जो

एक साथ मिलकर आत्मा के माध्यम से परमेश्वर के लिये निवासस्थान बनेंगे। `Z'08-312` R4261:3 (Hymn 332) आमीन

रात का गीत (10 जुलाई)

भजन संहिता 4:8 मैं शान्ति से लेट जाऊंगा और सो जाऊंगा; क्योंकि, हे यहोवा, केवल तू ही मुझ को एकान्त में निश्चिन्त रहने देता है।

हमें न्यौता दिया गया है की, हम अपनी सारी चिन्ता प्रभु पर डाल दें, ये जानते हुए की प्रभु हमारी चिन्ता करते हैं। और हमारे पास परमेश्वर का प्रोत्साहन से भरा आश्वासन है, अभी के क्लेशों के बीच में, कि हम महिमा का मुकुट पाएंगे जो कभी भी धुमिल नहीं होगा, यदि हम दृढ़ता के साथ सभ्य बने रहे और नम्रता के साथ अपने उद्धार के लिए डरते और कांपते हुए दौड़ को दौड़ें। ये याद रखते हुए की प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू से हमें पहले ही खरीद लिया गया है, और इस तरह से विश्वास के द्वारा, हमने उस विशेषाधिकार को पाया है, जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो सके। और क्लेशों के बीच में, हमें ये सुकून मिलता है, परमेश्वर के आशीषित आश्वासन के द्वारा, कि, परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करते हैं, और अभिमानी लोग भी परमेश्वर का विरोध करते हैं, पर परमेश्वर नम्र लोगों पर अपना अनुग्रह करते हैं।`Z'88-Aug., p.2` R1054:1 (Hymn 65) आमीन

रात का गीत (11 जुलाई)

यशायाह 45:3 मैं तुझ को अन्धकार में छिपा हुआ और गुप्त स्थानों में गड़ा हुआ धन दूंगा।

परमेश्वर के गुप्त खजाने को खोजने का अवसर भी पाने के लिए, हमें बलिदान के द्वारा, सच्ची कलीसिया और मसीह की देह का सदस्य बनकर, मसीह के पास आना होगा। जैसे - जैसे हम विश्वासी होते हुए अपने महायाजक के अन्दर याजक बनकर और हमारे महायाजक के पद चिन्हों पर चलते हुए बलिदान करते जाएंगे, हम ज्यादा से ज्यादा इन सच्चे "अनुग्रह के धन" को जो हमारे लिए रखा है, दिन पर दिन, साल - प्रति साल अपनी उन्नति के अनुसार पाते जायेंगे। प्रेरित ऐलान करते हैं कि, ये ज्ञान और अनुग्रह हमारे लिए -- अच्छी दिव्य चीज़ों का ज्ञान है जो हमारे लिए आरक्षित रखी हुई हैं, और परमेश्वर के साथ संगति करना हमें अनुमति देता है की हम पहले से विचार कर सकें और आनन्दित हो सकें उन आशीषों के प्रति जो हमें अभी के समय में मिलती है -- सब कुछ मसीह में छिपा हुआ है, "जिस में बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं"। `Z'01-55` R2762:4 (Hymn 221) आमीन

रात का गीत (12 जुलाई)

यूहन्ना 20:31 परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।

केवल वही विश्वास जो हमें परिक्षा में स्थिर रखेगा, और हमें हमारे तीन शत्रु पर: जो की दुनिया की आत्मा है, हमारा शरीर और शैतान है, उसपर जयवन्त होने में हमारी सहायता करेगा, हमारी आशा है, जो इस सुसमाचार के युग में हमारे सामने रखी गई है, जिसका का केन्द्र हमारे प्रभु यीशु हैं, मसीहा के रूप में। और यही आशा दुनिया के लिए भी है -- आशा की प्रभु यीशु मसीह ने अपने बहुमूल्य लहू का बलिदान करके पूरी दुनिया को छुटकारा दिलाया है, और निश्चित समय में, एक आशीष का अवसर हर एक प्राणी के लिए आएगा कि जो कोई भी अपनी इच्छा से ज्ञान और आज्ञापालन के साथ मसीह के पास आयेंगे उनको अनंत जीवन मिलेगा और जो आज्ञाकारी नहीं होंगे वे दूसरी मौत में नष्ट किये जायेंगे। इस आशा का, जिसका केंद्र यीशु - हमारे मसीहा हैं, दूसरा पहलु यह है की, वे लोग जिन्हें अभी बुलाया गया है, जो विश्वास के द्वारा आज्ञाकारी हैं, वे उस महान राज्य में, जिसमें पुरे संसार को आशीष मिलेगी, अपने स्वामी के साथ साँझा वारिस होंगें। इसमें कोई आश्चर्य नहीं की मसीहा पर केंद्रित इस आशा के लिये, इस राज्य की आशा के लिये, प्रेरित ने यह कहा की, "जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र

करता है, जैसा वह पवित्र है।" Z'05-188` R3580:5 (Hymn 215) आमीन

रात का गीत (13 जुलाई)

मत्ती 18:35 इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।

आपके मन में क्षमा की भावना का होना एक ऐसी स्थिति है जिसे हमेशा पाना चाहिये: हमें दूसरों के प्रति क्षमा और सदभावना को छोड़ कर और किसी भी अन्य भावना को स्थान नहीं देना चाहिए, फिर चाहे किसी ने हमारे विरुद्ध कितना भी गंभीर अपराध क्यों न किया हो: और यदि हमारे ह्रदय में क्षमा की भावना होगी, तो हम पश्चाताप करनेवालों को बाहरी रूप से क्षमा करने के लिये तत्परता से इच्छुक और उत्सुक होंगें। इसलिये हम पश्चाताप करनेवाले से विस्तार में उसके पछतावे से सम्बंधित बातों को सुनने की खोज में नहीं रहेंगें, बल्कि उड़ाऊ पुत्र के पिता की तरह, जब दूर से ही देखेंगे की, पश्चाताप करने वाला व्यक्ति हमारे पास आ रहा है, उसकी नम्रता हमारे ह्रदय को छू जाएगी और हम दूर से ही उसे देखकर उससे मिलने जाने के लिए, और उसे क्षमा करने के लिये, और हमारी सम्पूर्ण संगती और भाईचारे की चादर पहनाने के लिये, तत्पर होंगें। `Z'98-126` R2296:4 (Hymn 183) आमीन

रात का गीत (14 जुलाई)

यूहन्ना 16:24 अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।

एक मसीही के खुशहाल जीवन का रहस्य, परमेश्वर के द्वारा प्रगट किये गए सभी भलाईयों की प्रेम भरी सराहना करने, धन्यवाद करने और उनकी स्तुति करने की आत्मा को बढ़ाने में है। और परमेश्वर की स्तुति की आत्मा को हममें बढ़ाने के लिये यह आवश्यक है, की हम अपने मन में लगातार परमेश्वर की कृपा और अनुग्रह को याद करें; की हमारी प्रार्थनाओं में हम अक्सर परमेश्वर को बताएँ की उनकी सभी अच्छाईयों को कैसे याद किया जाता है, कैसे परमेश्वर के प्रेम और देखभाल के हर नए सबूत के कारण हमारा विश्वास गहरी जड़ें जमा लेता है और उनकी उपस्थिति और अनुग्रह को हम पूरी तरह से महसूस कर पाते हैं; और इस तरह के अनुभवों के माध्यम से हमारा प्रेम और आनंद अधिक से अधिक बढ़ते जाता है। हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, क्योंकि पहले उन्होंने हमसे प्रेम किया; और हर बार जब हम उनके प्रेम का नया चिन्ह देखते हैं, तो यदि हमारे पास प्रशंशा करने वाला ह्रदय हो, तो हमारा प्रेम अधिक से अधिक बढ़ता जाता है, और हम परमेश्वर में आनन्दित हो सकते हैं, जिनकी उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है। इसी आनंद को पाने के लिये हमारे प्रभु हमें प्रार्थना में, परमेश्वर के पास उनके अनुग्रह को पाने की बड़ी याचनाओं को लेकर, अक्सर आने के लिये प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं

की, "मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।" `Z'96-211` R2031:5 (Hymn 115) आमीन

रात का गीत (15 जुलाई)

प्रेरितों 13:38 इसलिये, हे भाइयो, तुम जान लो कि इसी के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है।

यहाँ पर प्रेरित उसको सम्बोधित नहीं कर रहे हैं, जो हमारे प्रभु यीशु ने मुख्य स्वर्गदूत के रूप में किया था, मनुष्य के रूप में "देह में आने से पहले" इस धरती पर, और न ही किसी कार्य को सम्बोधित कर रहे हैं, जो प्रभु यीशु ने, जब वे अपने नए, महिमाय वाली अवस्था में पहुँच गए थे, "मैं भी जय पा कर अपने पिता के साथ उनके दाहिनी ओर सिंहासन पर बैठ गया" और दिव्य स्वभाव के सहभागी हुए; पर यहाँ पर प्रेरित उस कार्य को सम्बोधित कर रहे हैं, जो प्रभु यीशु ने मनुष्य के रूप में किया था, "जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया"। फिर से प्रेरित जोर देकर कहते हैं इस तथ्य को, "क्योंकि जब मनुष्य (आदम) के द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य (प्रभु यीशु मसीह) ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। जी हाँ, यही केन्द्र है सुसमाचार के ऐलान का कि, आदम की असफलता के कारण जो कमी हुई थी, वह कमी प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा पूरी हुई, और पिता के इस कार्य को पूरा

करने के लिए ही, हमारे प्रभु के लिए ये जरुरी था की, वे अपनी उस महिमा को छोड़कर आएं जो उनकी पिता के साथ थी, इस दुनिया की सृष्टि के पहले, और हमारे लिए कंगाल हुए (इस नज़रिए से की, वे मनुष्य के रूप में इस धरती पर आए -- पर मनुष्य में जो धब्बा था, पाप करने के द्वारा वो उनमें नहीं था, पर वे पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग, थे"); और इस मानवीय स्वभाव को छुड़ौती के मूल्य में या समान मूल्य देकर, उस जीवन के लिए जो पिता आदम ने खो दी थी, उसको आदम और पूरी मानवजाति के लिए वापस ले लिया। यही वह आधार है जिस पर अनुग्रह करने का हर प्रस्ताव पवित्रशास्त्र के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। और अब, वे जो परमेश्वर पिता के दूत थे इस छुड़ौती दिलाने के कार्य में, वे सब को आशीष देने में भी दूत हैं, जिनको छुटकारा मिला है, उनको बहुत सारे अवसर देकर, परमेश्वर के दिव्य समर्थन देकर -- जो की पहला कदम है, पापों की क्षमा के लिए। `Z'97-138` R2150:1 (Hymn 68) आमीन

रात का गीत (16 जुलाई)

प्रेरितों 14:22 और चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे, कि हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।
इस वचन में क्लेश शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के ट्रिबुलम शब्द से हुई है, जो एक रोलर या गाहने की मशीन का नाम है, जिसका पुराने समय

में गेहूं की सफाई के लिए उपयोग किया जाता था, गेहूं से उसके बाहरी छिलके या भूसे को हटाने के लिये। यह सोच कितनी उचित है, जब इसे प्रभु के समर्पित लोगों पर लागु किया जाता है, जिन्हें पवित्रशास्त्र में गेहूँ के चिन्ह से सम्बोधित किया गया है। हमारा नया स्वभाव दाना, असली अनाज है; फिर भी यह खजाना या मूल्यवान हिस्सा सांसारिक परिस्थितियों के भूसी या छिलके के साथ ढका हुआ है। इस गेहूँ के दाने को, गेहूँ से खत्ते को भरने वाले के लिये, ठीक से तैयार और उपयोगी होने के लिये, यह आवश्यक है कि अनाज का प्रत्येक दाना उन क्लेशों से होकर जाये, जिनकी आवश्यकता उन गुणों को अलग करने के लिये है, जिन्हें अलग किये बिना, हम उस सेवा के लिये अयोग्य ठहर जायेंगे, जिसके लिये प्रभु के द्वारा हम बुलाये गए हैं। जिस अनुपात में हम अपनी खुद की अपरिपूर्णताओं को, और हमारे लिये परमेश्वर की सिद्ध इच्छा को महसूस कर पाते हैं, उसी अनुपात में हम इन सभी क्लेशों को, जिन्हें हमारे स्वामी हमारे ऊपर आने के लिये सर्वोत्तम देखते हैं, उन्हें धीरज से, यहाँ तक की कुछ हद तक आनन्दित होकर सहने में सक्षम हो पाते हैं। "हम क्लेशों में भी घमंड करते हैं।" `Z'97-138` R2150:1 (Hymn 68) आमीन

रात का गीत (17 जुलाई)

मलाकि 3:10 सारे दशमांश भण्डार में ले आओ, … और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं।

यह हमारे लिये लाभदायक है, प्रिय मित्रों, कि हम अपने चारों ओर देखें और इस बात पर ध्यान दें की, हम अपने बलिदान की वाचा को निभाने में किस हद तक विश्वासी रहे हैं, और यह याद रखें की यह बलिदान एक दिन या एक साल के लिए नहीं है, बल्कि "प्राण देने तक के लिये है"। थोड़ी देर में ये परीक्षाएँ खत्म हो जाएँगी, लेकिन जब तक ये थोड़ी देर का समय बीत नहीं जाता है, हम परीक्षा के समय में हैं, और यह हमें योग्य या अयोग्य साबित कर रहा है, उन महिमामय अनुग्रहों, मुख्य आशीष, मसीह के साथ साँझा वारिस होने के लिये, जिसकी हम खोज में हैं। अगर हम इसकी सराहना करते हैं, तो आइये हमें इसे प्रभु के तरीकों से खोजें, आइए देखें कि हमारे जीवन में और कौन सी चीजें हैं, जो हम प्रभु को सौंप सकते हैं और जिसे वह स्वीकार करेंगे, हमारे अपने कर्मों या बलिदानों की योग्यता के माध्यम से नहीं, लेकिन मसीह की योग्यता के माध्यम से। आइये देखें की दिन और घंटे जैसे-जैसे बीतते हैं, वे समर्पित तरीके से बिताये जाएँ; आइये हम इस बात पर ध्यान दें की, किस हद तक कुछ स्वार्थी तरीकों से कितने क्षण और दिन बिताए गये हैं, या फिर वचनों में बताये गए कर्तव्य की उचित आवश्यकताओं से परे, दूसरों पर व्यर्थ खर्च किये गए हैं। आइये देखें की हम किस हद तक प्रभु से की गई अपनी

मन्नतों को पूरा करते हैं, आइये हम इस बात पर ध्यान दें की हम अपने साधनों - समय या प्रभावित करने की क्षमता या धन में से कितना दिव्य सेवा में लगा रहे हैं और वह पुरे साधनों का कितना हिस्सा है? `Z'05-380` R3685:5 (Hymn 177) आमीन

रात का गीत (18 जुलाई)

लूका 11:28 धन्य वे हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं।

यह महत्वपूर्ण है कि हम प्रभु के वचन को सुनें, कि हम इन्हें पवित्रशास्त्र में ढूँढ़े, कि ये वचन हमारी जुबान पर हों, ताकि जो कोई भी हमसे हमारी आशा के विषय में कुछ पूछे, हम उसे उत्तर दे पायें, और हमें इससे भी अधिक करने की आवश्यकता है। हमें इन वचनों का आज्ञापालन करने की, अपनी क्षमता के अनुसार इनका अभ्यास करने की आवश्यकता है। यह सच है कि, हम परिपूर्णता की माँगों पर खरा नहीं उतर सकते, क्योंकि परमेश्वर की व्यवस्था सिद्ध है, लेकिन हमारे पास ह्रदय का दृष्टिकोण परिपूर्ण हो सकता है, और परिपूर्ण ह्रदय से कम कुछ भी प्रभु के लिए स्वीकार्य नहीं होगा। हम प्रभु को दिखा सकते हैं और कुछ हद तक दूसरों को, हमारे जीवन में धार्मिकता और पवित्र आत्मा के सभी फल और अनुग्रह को पाने की दिशा में किये गए प्रयास को दिखा सकते हैं। यदि

हमारे पास सभी ज्ञान और उत्साह है और आज्ञापालन की आत्मा नहीं है, तो यह प्रेम की आत्मा की कमी का सबूत होगा, और हमें उन दिव्य एहसानों और आशीषों के लिए अयोग्य साबित करेगा, जिसे देने का वादा ऊपर के वचन में उन लोगों से किया गया है, जो इस वचन का ठीक से अभ्यास करेंगे। `Z'05-366` R3678:4 (Hymn 267) आमीन

रात का गीत (19 जुलाई)

2 कुरिन्थियों 3:5,6 परमेश्वर ... ने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया।

हमारी स्थिति परमेश्वर के लिए राजदूतों की है, जो मनुष्यों को उनकी दया और नई वाचा के उनके प्रावधान के बारे में समझाते हैं, जिसके माध्यम से सभी को आशीष दी जा सकती है और यदि वे चाहते हैं तो उनका सुधार हो सकता है। जितने लोग इस सच्चाई के सुसमाचार को आनंद से ग्रहण करते हैं, और पाप से मुड़कर हमारे प्रभु के पीछे चलते हैं, उनको मसीह की देह का सदस्य बनने का न्योता मिल सकता है, जो की मसीहा की देह है, मध्यस्तर की देह है, महान भविष्यद्वक्ता की देह है, महान याजक की देह है, हजार वर्ष के राज्य के महान राजा की देह है। तो, हम नई वाचा के सेवक हैं, जिसमें हम अपने जीवन को उनकी

सेवा में, उनकी रुचियों में रख रहे हैं, हालाँकि यह अभी तक एक वाचा नहीं है, बल्कि केवल एक वादा है। हम न केवल अपने जीवन को बलिदान कर रहे हैं, बल्कि अभिषेक किये गए प्रभु यीशु की देह के लिये साथी सदस्यों की खोज भी कर रहे हैं और उनको उनका जीवन बलिदान करने में मदद कर रहे हैं, इस आश्वासन के तहत कि ये उत्तम बलिदान जल्द ही समाप्त हो जाएंगे, और हमारे महिमामय सिर प्रभु यीशु के द्वारा इन्हें लागु किया जायेगा और हम भी उनके साथ महिमा में होंगे। `Z'09-51` R4332:2 (Hymn 148) आमीन

रात का गीत (20 जुलाई)

प्रेरितों 26:22 परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक बना हूं।

अपने जीवन के संरक्षण के संदर्भ में, प्रेरित पौलुस, लिसियस को जो यरूशलेम की पलटन के सरदार थे, उनको सेनापति के रूप में श्रेय नहीं देते हैं, लेकिन यह घोषणा करते हैं कि, उन्होंने परमेश्वर की सहायता प्राप्त की, जिनके द्वारा वह अपने बोलने के समय तक बने रहे... प्रभु के सभी लोगों के लिए इसमें एक अच्छा सबक है। कितने लोग "भाग्य" या "मौका" या मानवीय साधनों को श्रेय देते हैं, इस तथ्य को अनदेखा करते हुए की प्रभु के संत उनकी देखभाल की विशेष वस्तु हैं, और यह कि प्रभु

के दूत उनके चारों ओर छावनी किए हुए उन को बचाते हैं। `Z'03-158` R3197:3 (Hymn 61) आमीन

रात का गीत (21 जुलाई)

यूहन्ना 15:4 जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।

हमारे प्रभु हमें यह संकेत देते हैं कि बहुत से फल उगाना पूरी तरह से हमारे खुद पर निर्भर नहीं है, और यह भी बताते हैं की, यहाँ तक की यद्यपि हम फल देनेवाली शाखा के रूप में प्रभु में बने रहें, तब भी फलों की गुणवत्ता और मात्रा को बेहतर करने के लिये, हमारे मन के सामने उचित आदर्शों का होना और पूरी गंभीरता से हमारा उन आदर्शों का पालन करना आवश्यक है। इसलिये प्रभु कहते हैं, "यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।" यहाँ पर यह संकेत किया जा रहा है कि, स्वर्गीय अनुग्रह के सिंहासन पर पिता से पूछना और चाहना एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा हम अधिक से अधिक दाखलता का रस यानि पवित्र आत्मा को पा सकते हैं, और आत्मा के फलों को विकसित करने में सक्षम हो सकते हैं। यह ध्यान दिया जाए कि यहां कुछ भी सांसारिक अच्छी चीजों की तलाश या

खोज के बारे में नहीं कहा जा रहा है। सांसारिक जरूरतों को प्रभु की बुद्धि और उनके प्रावधानों पर पूरी तरह से छोड़ देना चाहिए, और दाखलता की सच्ची शाखाओं को, पवित्र आत्मा की चाहत रखनी चाहिए और उसी को ढूँढना चाहिए; सांसारिक माता-पिता जो अच्छी वस्तुएं दे सकते हैं, उनकी तुलना में हमारे स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा देने के लिए अधिक इच्छुक हैं। `Z'99-111` R2466:2 (Hymn 91) आमीन

रात का गीत (22 जुलाई)

याकूब 2:20 कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है।

कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है, इस मामले में स्वयं को जाँचना बहुत सही है। यदि हमने परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में सुना, देखा, चखा है, और इसका आनंद लिया है, और यदि हम अनुग्रह से भरे पिता की सेवा करने या दूसरों को उन्हीं आशीषों को जिनका आनंद हमने लिया है, पाने में उनकी सहायता करने की चाहत को प्रगट नहीं करते हैं, तो यह प्रकट होता है कि, हमारे आत्मिक जीवन का उत्साह बहुत कमजोर है और नष्ट होने के खतरे में है। लेकिन अगर, इसके विपरीत, हम अपने आप को प्रभु के लिए प्रेम की सरगर्मी के साथ धधकते हुए पाते हैं, और उनके महान उद्धार की योजना की सराहना करते हुए पाते हैं, और दूसरों को उनकी

आशीष, मजबूती, उत्थान और दिव्य विश्वास में सहभागिता के लिये सुसमाचार बताने की चाहत में खुद को भस्म होते हुए पाते हैं, तो इससे हमको प्रोत्साहन मिलना चाहिए। हमें यह भी ध्यान देना चाहिए कि प्रभु यीशु विशेष रूप से अधिक उत्साही, जोरदार और ऊर्जावान प्रेरितों, पतरस, याकूब , यूहन्ना और हम पक्का हो सकते हैं कि पौलुस को भी प्रेम करते और उनका समर्थन करते थे। `Z'09-121` R4377:6 (Hymn 210) आमीन

रात का गीत (23 जुलाई)

नहूम 1:7 यहोवा भला है; संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है, और अपने शरणागतों की सुधी रखता है।

यद्यपि हम परमेश्वर के निज लोग होने के कारण, उनकी हमारे प्रति इस खास प्रेम और देखभाल की सराहना करते हैं, लेकिन यदि उन्होंने हमें जो भी आराम, प्रोत्साहन और सुरक्षा प्रदान किये हैं, जो कि, उन्होंने हमें पूरा संसार जिन क्लेशों से होकर जा रहा है, उसके बीच में हमें ये प्रदान किये हैं, यदि उसमें हम आत्म-संतुष्टि पा लें, तो हममें पिता की आत्मा की बहुत कमी है। यदि उसमें हम आत्म-संतुष्टि पा लें, तो हममें पिता की आत्मा की बहुत कमी है, और हम पिता के अन्दर पूरे संसार के प्रति जो महान प्रेम हैं, उसे भूल गए हैं, पिता का संसार के प्रति यह प्रेम, उनके

पापों के प्रति धार्मिक नाराजगी के बादलों के पीछे एक पर्दे में छुपा हुआ है। पिता अपने ज्ञान के अनुसार संसार को इन क्लेशों में एक भारी घूंसा मार रहे हैं, जो की उनकी मूर्तियों को चूर-चूर कर देगा, और उनके घमण्ड को मिट्टी में मिला देगा! यदि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि अपना एकलौता पुत्र दे दिया, तो वो पिता अब भी संसार से प्रेम रखते हैं। और यह उनका प्रेम ही है जो उनको सुधारने के लिए लाठी चला रहा है। इसी प्रकार से वे इन लोगों को अपने न्याय के प्रति आदर करना भी सिखाएंगे, जब संसार परमेश्वर के अनुग्रह की धुप में आनन्दित होंगे। उस समय परमेश्वर अपनी आत्मा संसार के साथ भी बाटेंगे; यद्यपि संसार पर परमेश्वर के धार्मिक नाराजगी का घूंसा उनपर अभी भारी पड़ रहा है, परमेश्वर हमसे यही चाहते हैं, कि हम उन्हें उनकी विपत्तियों के कारणों और उसके एक मात्र समाधान के बारे में बताएं। `Z'95-72` R1787:3 (Hymn 171) आमीन

रात का गीत (24 जुलाई)

प्रेरितों 4:33 प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।

इस वचन में हमें यह बताया जाता है कि, प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते थे। राजनीती या सामाजिक सवालों, विकासवादी

सिद्धांतों या उच्चतर महत्वपूर्ण शोध प्रबंधों की तुलना में यह गवाही प्रेरितों के लिए प्राथमिकता थी। यही, और अकेले यही, प्रेरितों के लिये मुख्य मुद्दा था। और इसलिए ऐसा हमारे साथ भी होना चाहिए। परमेश्वर की दिव्य योजना में प्रभु यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठना बहुत महत्वपूर्ण सच्चाई है, और इसका मूल्य और इशारा कलीसिया और दुनिया के लिए बहुत मुख्य है और इसी को हमारी गवाही में बताना प्रमुख होना चाहिए। न केवल प्रेरितों ने उनके वचनों के द्वारा और तार्किक प्रस्तुतियों के द्वारा प्रभु यीशु मसीह के मरे हुए से जी उठने की गवाही दी, बल्कि उनका खुद का जीवन भी एक गवाही था। जैसा की प्रेरित (2 कुरिन्थियों 3:2) वचन में कहते हैं, "हमारी पत्री तुम ही हो, जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है और उसे सब मनुष्य पहिचानते और पढ़ते हैं"। शुरू की कलीसिया में, प्रेरितों का जीवन प्रभु के लिए एक ख़ास गवाही था। यदि प्रेरितों का जीवन इस गवाही से और प्रभु और सत्य के प्रति उनके समर्पण से तालमेल न रखता, तो यह स्पष्ट है की, इस संदेशे का उतना प्रभाव नहीं पड़ता जितना हुआ। तो ऐसा ही, यह आज हमारे साथ है। यह अच्छा है की, हम परमेश्वर के वचन का प्रचार करें। यह और भी महत्वपूर्ण है की, वचनों के मुताबिक हमें अपना जीवन जीना है। पर आदर्श यह है कि हम वचन (सत्य) का प्रचार करें और उसके मुताबिक जियें भी। `Z'09-140` R4391:1 (Hymn 267) आमीन

रात का गीत (25 जुलाई)

1 पतरस 2:21 और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद-चिन्हों पर चलो।

इस वचन को हमें न केवल सबसे कड़ी परिक्षाओं में याद करना चाहिए बल्कि हल्के क्लेशों में भी हमें इस वचन को याद करना चाहिए, जब हमारे नाम की बुराई की जाए, "जब लोग हमें निकाल दें", जैसा की लूका 6:22 वचन में कहा गया है। जब प्रभु के प्रति और उनके वचनों के प्रति और उनके सच्चाई के सिद्धांतों के प्रति हमारी वफादारी के कारण लोग "झूठ बोल बोलकर हमारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें" (मत्ती 5:11 वचन), तब इस वचन को याद करें और अपने ह्रदय को इससे तालमेल में लाएं और प्रभु के द्वारा बताए गए दूसरे वचनों को भी ध्यान में लाएं। हमें यह ढांढ़स मिलता है कि, हमारे विरोधियों की ओर से मिले सभी अनुभवों में प्रभु की इच्छा है कि, हमारे सर्वोत्तम कल्याण के लिए इन्हें अपने वश में कर लें। ताकि ये सारे अनुभव मिलकर हमारे लिए बहुत ही बड़ी और अनन्त महिमा को उत्पन्न करें। सभी लोग जो राज्य में स्वर्गीय श्रेणी के हैं, उनके लिए यह जरुरी है कि, वे लोग इस तरह के अनुभवों से होकर जाएँ ताकि उनके चरित्र की उन्नति और परिक्षा हो सके। `Z'05-254` R3617:4 (Hymn 299) आमीन

रात का गीत (26 जुलाई)

प्रेरितों 8:4 जो तित्तर-बित्तर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।

कुछ प्रिय ईसाई लोग समाज शास्त्र, प्रकृति की खुबसुरतियों और संसार की चीज़ों पर उपदेश देने की गलती करते हैं। दूसरे लोग लगातार गलतियों और गलत बातें बताने वालों पर ऊपरी ओर से दिलचस्पी लेते हैं। इस तरह की बातों के लिए सन्देशे के सिलसिले में समय और जगह हो सकती है; लेकिन सभी जो प्रभु की सेवा करेंगे, उन्हें अवश्य ये याद रखना चाहिए कि हमें केवल मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए ही नियुक्त किया गया है। मसीह और उनका संदेशा रोशनी से बना होता है, जो हमारे मन में आई थी -- एक रोशनी जिसका उजाला हमें दूसरों को आशीष देने के लिए चमकाते रहना है। अन्धकार रोशनी से नफ़रत करती है और रोशनी के विरुद्ध लड़ती है; पर रोशनी को चमकते रहना है। हमारे प्रभु यों कहते हैं, मत्ती 5:16 वचन में, "उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें।" हम जो संदेशा हमारे होठों पर लेकर जाते हैं, केवल वही रोशनी नहीं है, बल्कि हमारे दैनिक जीवन से जो प्रभाव निकलता है, वो भी ये ज्योति है। हमें इस बात का ज्यादा से ज्यादा दृढ निश्चय है कि परमेश्वर की इच्छा यह है कि उनके संदेशों को वही लेकर जाए जिनके मन शुद्ध हैं। जैसा की यशाशाह 52:11 वचन में कहते हैं, "हे यहोवा के पात्रों के ढोने वालो, अपने को शुद्ध करो"। `Z'09-45` R4330:5 (Hymn 154) आमीन

रात का गीत (27 जुलाई)

भजन संहिता 96:2,3 यहोवा के लिये गाओ, उसके नाम को धन्य कहो; दिन प्रतिदिन उसके किए हुए उद्धार का शुभ समाचार सुनाते रहो। देश देश के लोगों में उसके आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो।

वे सब जो सत्य के हैं, वे सत्य को सुनते हैं, और वे सभी सच्चाई की गवाही देने से प्रेम करते हैं। लेकिन जैसा हमारे स्वामी के साथ था, हमारे साथ भी वैसा ही है, संसार हमें नहीं जानता। ये संसार हमें नहीं जानता क्योंकि इसने प्रभु यीशु को भी नहीं जाना। यह दुनिया, खासकर नाम के ईसाईयों की धार्मिक दुनिया, जैसे इन्होंने प्रभु यीशु को क्रूस पे चढ़ाया, वैसे ही हमें भी क्रूस पर चढ़ाना चाहते हैं। लेकिन अभी हम एक सभ्य और शिक्षित समाज में रह रहें हैं, इसलिए धर्म शास्त्री लोग, जो व्यवस्था के ज्ञाता हैं, हमें खुलेआम शारीरिक ताड़नाएँ नहीं दे सकते हैं। लेकिन हम परमेश्वर के अनुग्रह से, जब तक वो रात न आ जाये, जिसमें कोई मनुष्य काम नहीं कर सकता, सत्य की गवाही देते रह सकते हैं, और तब तक, हमारी जान बची हुई है। `Z'16-151` R5898:6 (Hymn Appendix H) आमीन

रात का गीत (28 जुलाई)

यूहन्ना 6:63 जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा है, और जीवन भी हैं।

ऊपर का वचन हमें ये बताता है कि प्रभु यीशु की शिक्षाएँ, दृष्टांतों में होने के कारण समझने में बहुत कठिन हैं, लेकिन जो उसे समझ पाते हैं, उनके लिए प्रभु यीशु मसीह के सन्देशे ऐसे हैं, जो की आत्मिक जीवन के लिए बहुत ही मददगार हैं और उनकी बातों में जीवन हैं। प्रभु के संदेशे का यही गुण बाइबल के धर्म को सभी मूर्तिपूजकों के धर्म से अलग करता है। बाईबल में जीवन का संदेशा भी है, और पवित्रता का संदेशा भी है। इसमें क्षमा का और डाँट का सन्देशा भी है। इसमें प्रेम और न्याय का सन्देशा भी है। प्रभु यीशु के अद्भुत जीवनदायक वचन -- आकर्षित करते हैं, खूबसूरत हैं और जोर से प्रभाव डालते हैं! हम उन वचनों को साल प्रतिसाल पढ़ते जाते हैं, और उनमें ज्यादा से ज्यादा गहराई और सुन्दरता पाते हैं। और उसी अनुपात में हम अनुग्रह में बढ़ते जाते हैं, परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ते जाते हैं, और मसीह की आत्मा में बढ़ते जाते हैं। `Z'10-219` R4644:6 (Hymn 49) आमीन

रात का गीत (29 जुलाई)

रोमियों 12:12 प्रार्थना मे नित्य लगे रहो।

प्रार्थना, परमेश्वर के साथ बात-चित करना है, यह हमारी आत्मिक भलाई के लिए बहुत जरुरी है; और हमको परमेश्वर के प्रति आभार प्रकट करना चाहिए कि, उन्होंने हमको ये विशेषाधिकार दिया है, की हम उनसे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा बातचित कर सकते हैं या यदि हम परमेश्वर के प्रति आभार प्रकट करने में कमी करें, जैसी की, सम्भावना हो सकती है, तो इसका मतलब साफ़ साफ़ यह है की हम प्रभु के कार्यों के प्रति ठण्डे हो गए हैं। लोगों के अन्दर खुद की योजनाओं के प्रति सेवा करने का बहुत उत्साह होता है, या मानव प्रणाली और सिद्धांत के प्रति बहुत उत्साह होता है, और प्रार्थना के प्रति कम उत्साह होता है, पर जो प्रभु और सच्चाई की सेवा पूरे उत्साह के साथ करते हैं, जोश से भरे हुए ह्रदय के साथ करते हैं, वे ये महसूस करेंगे की वे खुद में कितने अपरिपूर्ण है और कितने अयोग्य हैं परमेश्वर की दिव्य सेवा के प्रति, की वे यही चाहेंगे की वे लगातार स्वामी का मार्गदर्शन और दिशा पा सकें, उस सेवा के प्रति जो हम उनकी कर रहे हैं। `Z'97-265` R2213:6 (Hymn 239) आमीन

रात का गीत (30 जुलाई)

मीका 7:18 तेरे समान ऐसा परमेश्वर कहां है जो अधर्म को क्षमा करे और अपने निज भाग के बचे हुओं के अपराध को ढांप दे? वह अपने क्रोध को सदा बनाए नहीं रहता, क्योंकि वह करूणा से प्रीति रखता है।

मूर्तिपूजा के सारे ईश्वर प्रतिशोध लेने वाले होते हैं। केवल बाईबल ही ये दावा करता है कि, परमेश्वर प्रेम हैं "जिनकी करुणा सदा की है" जैसा की भजन संहिता 136 के वचन बार बार कहते हैं। आह! मनुष्यों ने दुनिया और नाम के ईसाईयों के सामने परमेश्वर के प्रेम, न्याय, ज्ञान और शक्ति को गलत ढंग से प्रस्तुत किया है, और लोग ऐसा कहते हैं कि, परमेश्वर को अपने प्राणियों में से ज्यादातर लोगों को यातना देना भाता है; क्योंकि यदि परमेश्वर के प्रावधान में मनुष्यों को यातना देना है, जो कि अन्त को शुरू से ही जानते हैं, तो वह निश्चित रूप से ये साबित करता है कि, परमेश्वर मनुष्यों को ताड़ना देकर आनन्दित होते हैं और उनका इरादा उनकी ताड़ना करना था। लेकिन, वाकई में ऐसा नहीं है। क्योंकि जब हमारी आंखें परमेश्वर के वचनों का सही मतलब समझने के लिए खोली जाती हैं, तब परमेश्वर का चरित्र हमारे आँखों के सामने महिमामय बन जाता है, और उनके आदेश हमारे लिए प्रेम और भक्ति बन जाते हैं! जैसा की प्रेरित ऐलान करते हैं, कि, ये परमेश्वर का दिव्य प्रेम है, जो हमें उनके प्रति विश्वासी और आज्ञाकारी बनाता है। `Z'11-378` R4892:3 (Hymn 296) आमीन

रात का गीत (31 जुलाई)

भजन संहिता 145:10-12 हे यहोवा, तेरी सारी सृष्टि तेरा धन्यवाद करेगी, और तेरे भक्त लोग तुझे धन्य कहा करेंगे! वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे, और तेरे पराक्रम के विषय में बातें करेंगे; कि वे आदमियों पर तेरे पराक्रम के काम और तेरे राज्य के प्रताप की महिमा प्रगट करें।

ऊपर के वचनों में दाऊद भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के सभी संतों को बताते हैं की, उनके पास परमेश्वर के राज्य की चर्चा करने का और परमेश्वर के नाम का आदर करने का ख़ास अधिकार है। और ये अभी के समय में पूरा होता प्रतीत होता है, क्योंकि परमेश्वर अभी के समय में उनके सभी संतों पर (परमेश्वर के प्रति सारी दुनिया में जो समर्पित लोग हैं), उनके ऊपर वर्तमान सच्चाई का प्रकाश डाल रहे हैं। इस हद तक कि, उनके ऊपर इस सच्चाई की रोशनी उनके रास्ते पर उनको दिखाई दे, और हमारे परमेश्वर के महिमामय चरित्र को, उनके युगों की महान, दिव्य योजना के ज्ञान के द्वारा हम पर प्रगट कर सके। इसके अलावा, ऐसा प्रतीत होता है की, परमेश्वर के नाम की महिमा करने और सच्चाई बांटने के लिए परमेश्वर हर सन्त को सामर्थ दे रहे हैं और अवसर दे रहे हैं। किसी को उन्होंने बोलने का हुनर दिया है और मौका दिया है, जिसे वे परमेश्वर की प्रशंशा करने के लिए उपयोग में ला रहे हैं; दूसरों को परमेश्वर ने निजी तौर पर

बात करने का हुनर दिया है, ताकि वे परमेश्वर के राज्य के बारे में लोगों को बता सकें और परमेश्वर की महिमा के बारे में बता सकें, और जिनके पास सुनने के कान हैं, उनको परमेश्वर की योजना के बारे में बता सकें। दूसरों को अभी भी उन्होंने अपने संदेश को मुद्रित पृष्ठ के संचलन के माध्यम से घोषित करने का विशेषाधिकार दिया है; और कुछ लोगों को उन्होंने मूसा और मेम्ने के गीत गाने के इन सभी तरीकों का इस्तेमाल करने के अवसर दिए हैं। और हम निश्चिंत हो सकते हैं कि, ऐसा नहीं हो सकता है कि कोई इस समय में प्रभु के संतों के समूह का हो, और उनकी अच्छाई और उनके अद्भुत सम्मान और महिमा के बारे में जानता हो, और सुनने की इच्छा रखने वाले सभी लोगों के साथ बड़े आनंद का सुसमाचार सुनाने की इच्छा न रखे। और जो लोग सबसे अधिक गंभीर हैं, संदेश की घोषणा करने में सबसे अधिक उत्साही हैं, उनका अपने स्वयं के हृदय में, और अपने स्वयं के अनुभवों में, और अनुग्रह में, ज्ञान और प्रेम में सबसे अधिक विकसित होना निश्चित है। `Z'00-313` R2714:6 (Hymn 118) आमीन